अजाय बानी

मासिक पत्रिका

मार्च-2024

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–ग्यारहवां	मार्च–2024

3 **संदेश**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले दिया गया संदेश

5 **परमात्मा का खेल**
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

17 **नाम**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक महत्त्वपूर्ण संदेश

23 **प्यार और भरोसा**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

32 **धन्य अजायब**
2024 में सतसंगों के कार्यक्रम

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 264 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले दिया गया संदेश

संदेश

जनवरी 1982 — 16 पी. एस. आश्रम (राजस्थान)

मैं हमेशा अपना तजुर्बा बताया करता हूँ। सब सन्तों ने अपने तजुर्बे बताए हैं अगर कोई सच्चे दिल से परमात्मा को खोजता है, परमात्मा की भक्ति करता है तो उसे परमात्मा ज़रूर मिलते हैं। परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है, अमोलक खजाना है यह हर प्रकार के अवगुण और दोषों को धोकर आत्मा को इस तरह साफ़ कर देती है जिस तरह सर्फ से कपड़े को साफ कर देते हैं। जहां शब्द प्रकट हो जाता है वहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पंछी पर तक नहीं मारते क्योंकि नाम का बाज़ बहुत तगड़ा और शक्तिशाली होता है। यह भक्ति सच्चा सुख और सच्ची इज्जत की दाता है।

परमात्मा के भक्त, परमात्मा के प्यारे, परमात्मा से बढ़कर होते हैं क्योंकि उन्होंने अपना आप परमात्मा, सतगुरु पर अर्पण किया होता है। वे परमात्मा के प्यारे बच्चे बन जाते हैं। पिता प्यारे बच्चों से कुछ भी छिपाकर नहीं रखता। हम यह भक्ति का धन, अमोलक खजाना सन्त–सतगुरु की मदद के बिना अपने आप हासिल नहीं कर सकते।

मुझे बहुत खुशी है कि प्रेमी इस पवित्र यात्रा में आए हैं। प्रेमी अपने अच्छे–अच्छे तजुर्बे बताकर जाते हैं, वे जब आते हैं उस दिन भी अपनी हालत बताते हैं और जब वापिस जाते हैं तब भी अपनी हालत बताते हैं कि हमने यहां आकर क्या कुछ प्राप्त किया और वापिस पहुँचकर उसे किस तरह कायम रखने की कोशिश करेंगे।

हुज़ूर ने पच्चीस साल यही उपदेश दिया कि देने वाले का क्या कसूर है? सवाल तो लेने वाले का है। इसी तरह सन्त–सतगुरु धुर दरगाह से देने के लिए ही आते हैं, अब आगे सवाल हमारा लेने वालों का होता है

क्योंकि इस समय कृपाल की जो मौज बंट रही है, यह मौज सबको देना ही जानती है, सबकी झोलियाँ भरना ही जानती है। वे भाग्यशाली जीव होंगे जो इस मौज से फ़ायदा उठा लेंगे।

यह वह जगह है जहां हुजूर कृपाल ने इस गरीब की दुनियादारी की तरफ़ से आखें बंद करके अंदर की तरफ़ खोली थी। उन्होंने यहाँ अंदरूनी दया की थी। आज तक जिसने भी अपने गुरुदेव के वचनों का पालन किया, गुरुदेव ज़रूर उसे रूहानियत के साथ मालोमाल कर देते हैं।

आपने इन दस दिनों में जो मुझे अपनी तरक्की बताई है, मैं आशा करता हूँ कि आप अपने देश में जाकर अभ्यास करेंगे, आलस नहीं करेंगे। पाँच लुटेरे डाकू–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से बचने का उपाय शब्द–नाम की कमाई है। आपने इस यात्रा को याद रखना है और दूसरे प्रेमियों को भी इस यात्रा के फ़ायदे बताने हैं कि दस दिन किसी मालिक के प्यारे के साथ बिताने कितने कीमती हैं। कबीर साहब ने कहा था:

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी हूँ से आध, कबीरा संगति साध की, कटै कोटि अपराध।।

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज DVD-518(4)

परमात्मा का खेल

अप्रैल 1985 | गुरु रामदास जी की बानी | आस्ट्रेलिया

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''कुदरत का उसूल है कि भूखे को रोटी और प्यासे को पानी जरूर देती है।'' आप कुदरत, परमात्मा या भगवान कुछ भी कह लें वह सहज ही अपने आप काम करता रहता है। आप भगवान को मानें या न मानें यह आपकी मर्जी है लेकिन भगवान ने दया करके हमें इंसानी जामा दिया है। इंसानी जामें में आकर हमने यह सोचना है कि पशु–पक्षियों को भी जामा मिला है अगर हमने इस इंसानी जामे को दुनिया के भोगों या ऐशो–इशरतों में खो दिया तो हमारे और पशुओं में क्या फर्क है।

पशु–पक्षी भी मियां–बीवी बनते हैं, उन्हें भोग भोगने की ट्रेनिंग कौन देता है? उन्हें भी सहज ही ज्ञान होता है। पशु–पक्षियों के भी बच्चे–बच्चियां हैं, वे भी सोते हैं और हम भी सोते हैं। इंसानों के भी बच्चे–बच्चियां हैं। सुख–दुख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरुस्ती हर योनि में है। इंसान होकर हम इनका सामना कर लेंगे तो कोई फर्क नहीं हुआ अगर इंसानी जामें और पशु–पक्षियों में कोई फर्क है तो वह यह है कि इंसानी जामें में विवेक बुद्धि है जिससे हम सच–झूठ का निर्णय कर सकते हैं। इंसानी जामें में बैठकर हम अपना भविष्य बना सकते हैं।

सन्त–महात्मा, ऋषि–मुनि, पीर–पैगम्बर हमेशा ही परमात्मा के हुक्म में इस संसार में आए। उन प्रभु प्यार में रंगे हुओं ने हमें परमात्मा की जानकारी दी, परमात्मा से मिलने के फायदे बताए। जब वे मालिक के प्यारे इस संसार से चले जाते हैं फिर हम उनके नाम पर समाज खड़ा कर लेते हैं, कौम बना लेते हैं।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं अगर कोई बच्चा आज से चार हजार साल पहले पैदा हुआ तो उसे भी आज के बच्चों की तरह ही माता–पिता की जरूरत थी अगर आज कोई बच्चा पैदा होता है तो उसे भी माता–पिता की जरूरत है, दूध और देखभाल की जरूरत है। इसी तरह पहले जो आत्माएं संसार मंडल में आईं अगर उन्हें गुरु पैगम्बर की जरूरत पड़ी तो आज जो आत्माएं इस मंडल में विचर रही हैं, उनके लिए भी सन्त–महात्मा के पास जाना उतना ही जरूरी है जितना पहले के वक्त में था।

सन्त–महात्माओं को इस संसार में आकर कुछ सच्चाई की बातें बतानी पड़ती हैं क्योंकि हम लोग कुएं के मेंढक की तरह हैं जिस तरह कुएं के मेंढक के पास समुंद्र का हंस चला गया। मेंढक ने पूछा, ''तू कौन है?'' हंस ने कहा, ''मैं समुंद्र का एक गरीब हंस हूँ।'' मेंढक ने पूछा, ''समुंद्र कितना बड़ा होता है?'' हंस ने कहा, ''समुंद्र काफी बड़ा होता है।''

मेंढक ने कुएं का छोटा सा चक्कर काटकर कहा कि समुंद्र इतना बड़ा होता है? हंस ने कहा, ''इससे भी बड़ा होता है।'' मेंढक ने कुएं का थोड़ा और बड़ा चक्कर काटकर कहा, ''क्या समुंद्र इससे भी बड़ा होता है।'' हंस ने कहा, ''इससे बहुत बड़ा होता है।''आखिर मेंढक को गुस्सा आया और मेंढक ने कुएं के दूसरे हिस्से तक छलांग लगाकर कहा, ''क्या समुंद्र इतना बड़ा होता है?''

हंस ने कहा कि तू मेरे साथ चल, मैं तुझे दिखा सकता हूँ कि छोटे–छोटे करोड़ो ही कुएं समुंद्र में समा सकते हैं। मेंढक न तो कुएं से निकलने के लिए तैयार था और न हंस की बात मानने के लिए ही तैयार था। मेंढक ने कहा, ''समुंद्र इससे बड़ा हो ही नहीं सकता, तू झूठ बोलता है, तू बेईमान है।''

हमारी भी कुएं के मेंढक वाली हालत है, हमारे छोटे–छोटे ख्याल हैं, छोटे–छोटे दिमाग हैं। जो बात हमें समझ नहीं आती हम उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। हम कहते हैं कि हम जिस समाज में रह रहे हैं, यही ठीक है। महात्मा प्यार से समझाते हैं कि आपका दिल जिस भी समाज में रहने के लिए मानता है, आप उसी समाज में रहें। समाज स्कूल, कॉलेजों की तरह हैं। डिग्री प्राप्त करना इससे ऊपर महात्मा के पास पहुंचना है, महात्मा से हमें परमात्मा के पास पहुँचने की डिग्री मिलती है।

महात्मा कहते हैं कि आप अपने–अपने समाज में रहें, अपनी–अपनी बोलियां बोलें। वह परमात्मा आपके जिस्म के अंदर है जिस तरह दूध के अंदर घी है, मेंहदी के पत्तों के अंदर रंग है, फूल के अंदर खुशबू है लेकिन बिना युक्ति के हम उसे निकाल नहीं सकते। बेशक परमात्मा हमारे जिस्म के अंदर है लेकिन हम अपने आप परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु साहब कहते हैंः

मत को भरमि भुलै संसारि गुरु बिन कोई न उतरसि पारि।

कबीर साहब जब–जब संसार मंडल में आए, वे कभी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए। वे सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग में भी आए। वे जिन्हें नाम देकर गए उनका जिक्र अनुराग सागर में आता है। उन्होंने बताया कि सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत था, त्रेता में करूणामय, द्वापर में मनिन्दर और कलयुग में कबीर नाम पड़ा। आप अपनी बानी में लिखते हैंः

कबीर गुरु की भक्ति बिनु, राजा गधा होए।
माटी लदै कुम्हार की, घास न डारै कोए।।

मैं आपको हिन्दुस्तान के एक बादशाह की घटना सुनाता हूँ, उसकी लिखी हुई वसीयत बताता हूँ। आज से सवा तीन सौ साल पहले मुगल खानदान में औरंगजेब बादशाह हुआ है, वह सुन्नी मुस्लमान

था। उसने अपने मजहब को बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, बड़ी कत्लोगारत की और लोगों को लालच भी दिया। उसने हिन्दुओं के मंदिर तोड़कर मस्जिदें बनवा दी। उसने हिन्दू परंपरा के अनुसार कई शहरों के नाम बदलकर मुसलमानों की शरा के मुताबिक नाम रख दिए। उसने हिन्दुस्तान पर सत्ताईस साल राज्य किया, बहुत से साधु–सन्तों के कत्ल करवाए कि मौहम्मद के बगैर कोई पीर–पैगम्बर हो ही नहीं सकता। वह बहुत शक्तिशाली बादशाह हुआ है लेकिन जब उसका अंत समय आया तो उसने एक वसीयत लिखी। आमतौर पर बाबा बिशनदास जी मुझे वह वसीयत सुनाया करते थे।

वह वसीयत इस तरह है कि इसमें कोई शक नहीं कि मैं हिन्दुस्तान का शक्तिशाली बादशाह रहा हूं। मैंने हुकूमत की है लेकिन मैं अपनी जिंदगी में कोई नेक–पाक अच्छा काम नहीं कर सका। मेरी आत्मा धिक्कार मार रही है और मुझसे अंदर यह भी कह रही है कि अब पछताने का क्या फायदा? उसने कहा कि अंत समय में कोई भी मेरे शरीर को हाथ न लगाए, मेरा लड़का आजम ही मेरे शरीर को दफनाए।

मेरा नौकर आया बेग है जिसके पास एक बटुआ है। उस बटुए में चार रूपये दो आने हैं, वही मेरी सारी जिंदगी की नेक कमाई है। मैं जब दफ्तर के काम से खाली होता था तो टोपियां बनाया करता था, मेरी नेक कमाई जो बची है, वह चार रूपये दो आने ही हैं। इन पैसों से मोटे खादी का कफन मेरे ऊपर डालना है। जहां से मेरा जनाजा निकलेगा वहां कोई दरी वगैरह नहीं बिछानी, कोई राग–रंग नहीं करना, मैं राग का दुश्मन हूँ, संगीत से नफरत करता हूँ।

मेरी कब्र घने जंगल में खोदनी है, मेरी कब्र के ऊपर कोई निशानी या मकबरा नहीं बनाना अगर कोई निशानी रखनी भी हो तो कच्ची इंटों

का चबूतरा बनवा देना, मेरी कब्र पर कोई पेड़ न लगाना क्योंकि जिस आदमी ने कभी कोई नेक काम न किया हो, उस पापी आदमी को यह हक नहीं कि वह पेड़ की छाया भी ले सके। मुझे जब कब्र में डाला जाए तो मेरा मुंह मिट्टी से न ढकें उसे नंगा रखें। मुझे किसी ने बताया है अगर नंगे सिर परमात्मा के पास जाएं तो हो सकता है कि उसके गुनाह बख्शें जाएं। अब मुझे पता लगता है कि मैंने कोई नेक–पाक काम नहीं किया।

अब आप खुद सोचकर देखें, आखिरी वक्त में हिन्दुस्तान के शक्तिशाली बादशाह के क्या ख्याल थे? हम लोग टेक तो बांध लेते हैं लेकिन टेक से कोई फायदा नहीं होता। उस समय एक मौलवी हामिद–उद–दीन था जिसने औरंगजेब की वसीयत लिखी थी, यह वसीयत उस किताब के 163 से 218 पन्ने पर दर्ज है।

सन्त–महात्मा हमें कोई इतिहास नहीं सुनाते, उनका मकसद यही होता है कि नाम के बिना दुनिया के बड़े–बड़े राजा भी संसार से रोते हुए गए हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सहंसर दान दे इन्द्रु रोआइआ, परस रामु रोवै घरि आइआ
रोवै रामु निकाला भइआ, सीता लखमणु विछड़ि गइआ।
रोवै दहसिरु लंक गवाइ, जिनि सीता आदी डउरू वाइ
रोवहि सेख मसाइक पीर, अंति कालि मतु लागै भीड़।।

आखिर हमारे नेक कर्म और बुरे कर्म हमें देह के बंधनों से आजाद नहीं कर सकते। नाम के बिना परमात्मा किसी भी चीज को लेखे में नहीं लगाता। नाम वह ताकत है जो जर्रे–जर्रे में व्यापक है। सन्त–महात्मा हमारे अंदर उस नाम को टिका सकते हैं, नाम की ताकत लिखने–पढ़ने और बोलने में नहीं आती।

मैंने कल स्वामी जी की बानी पर सतसंग किया था, आज गुरु रामदास जी की बानी है। गुरु रामदास जी कहते हैं कि गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। सतसंग के बिना हमारे अंदर विरह और तड़प पैदा नहीं होती। सतसंग में आकर इंसान अपने ऐबों और कमियों की तरफ तवज्जो देता है और नाम के फायदे समझने की कोशिश करता है। जो समाज और कौमें यह कहती हैं कि हमें किसी गुरु पीर की जरूरत नहीं, हमारी समाज ऊँची हैं। सन्त कहते हैं कि उन आत्माओं के अंदर अभी परमात्मा से मिलने का शौक और विरह पैदा नहीं हुई, परमात्मा ने उन्हें अपने चुनाव में नहीं लिया।

जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो माता–पिता की परवाह नहीं करता, वह कहता है कि मुझे इनकी क्या जरूरत है? आप माता से पूछें कि जब बच्चा माता के पेट में होता है तो माता को कितना दुख झेलना पड़ता है। माता ऊँची–नीची जगह पैर नहीं रखती, कोई बोझ उठाने का काम नहीं करती और खाना भी सोच समझकर खाती है जो गर्भ में बच्चे के खिलाफ न हो। जब बच्चा पैदा हो जाता है तो माता खुद गीली जगह पर सोती है और बच्चे को सूखी जगह सुलाती है। बच्चे के मुँह में थोड़ा–थोड़ा खाना डालकर उसे खाना खाना सिखाती है। समाज की बोली बताती है। ऐसी कौन–सी कुर्बानी है जो बच्चे की खातिर उस माता ने नहीं की होती, बच्चा बड़ा हो जाता है फिर भी माता उसे नहीं भूलती।

एक दुनियावी माता के अंदर बच्चे के लिए इतनी ममता है तो जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है क्या वह हमें भूल सकता है? वह हमेशा हमें याद करता है। हम भूल जाते हैं फिर वह अपने प्यारे बच्चे सन्त–महात्माओं को भेजता है कि जिन आत्माओं के दिल के अंदर तड़प है, आप उन्हें मेरी जानकारी दें कि मैं उनके अंदर ही बैठा हूँ। मैं बाहर मंदिर–मस्जिद में नहीं मिलता, किसी पहाड़ की चोटी में नहीं मिलता,

मैं रोज उन्हें अंदर से आवाज दे रहा हूँ लेकिन वे मेरी आवाज को नहीं सुनते और न अंदर आने की हिम्मत करते हैं।

जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि।।
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि।।
तिउ सतिगुरु गुरु सिख राखता हरि प्रीति पिआरि।।

अब आप प्यार से बताते हैं कि जब माता के पेट में आत्मा प्रवेश कर जाती है, जब तक माता उसे बड़ा नहीं कर देती, अपना फर्ज अच्छी तरह निभाती है। इसी तरह शिष्य और सतगुरु का रिश्ता इससे भी ज्यादा अटूट है। जहां माता–पिता, बहन–भाई, यार–दोस्त, हुक्म हुकूमत कोई भी मदद न कर सके वहां गुरु का प्यार, गुरु की मौहब्बत हमारी मदद करती है। सन्त हमें दो अक्षर बताकर पीछा नहीं छुड़वा लेते, वे जिम्मेदारी लेते हैं और नामदान के वक्त अंदर इस किस्म का इंतजाम

कर देते हैं कि हम दुनिया का लेन–देन, कर्मों का भुगतान करते रहते हैं और अंदर तरक्की भी करते रहते हैं।

एक महात्मा मुर्गी की मिसाल होते हैं जिस तरह मुर्गी अंडों के ऊपर बैठकर अंडों को पकाती है। एक महात्मा कछुए की मिसाल होते हैं जिस तरह कछुआ अपने अंडे खुष्की में देता है लेकिन वह पानी में रहता है और वह ध्यान के द्वारा अंडों को पकाता है। अगर वह अपना ध्यान दूसरी तरफ कर ले तो अंडे सड़ जाते हैं।

इसी तरह एक महात्मा अपने नजदीक के शिष्यों की संभाल करता है। आला दर्जे के महात्मा कूंज की मिसाल होते हैं। कूंज सर्दियों में पहाड़ों के ऊपर अंडे देकर खुद वहां नहीं रहती, मैदानी इलाकों में आ जाती हैं, वह अपनी याद शक्ति के द्वारा अपने बच्चों की परवरिश करती है।

इसी तरह आला दर्जे के महात्मा कूंज की मिसाल होते हैं, उनके लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता, वे अपने ध्यान के द्वारा ही अपने सेवकों की संभाल करते हैं। अगर एक दिन में हजारों सेवक ही चोला छोड़ जाएं तो गुरु 'शब्द रूप' होकर जरूर उनकी संभाल करते हैं। वे जब नाम दे देते हैं तो सेवक के साथ इस तरह रहना शुरु कर देते हैं जैसे साया साथ नहीं छोड़ता इसी तरह गुरु सोते–जागते सेवक के साथ रहता है। गुरु साहब कहते हैंः

गुरु मेरै संगि सदा है नाले, सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्माले।

अगर रात का वक्त हो, मकान बंद हो, आंधी–तूफान चल रहा हो आप गुरु का दिया हुआ सिमरन करें या गुरु को याद करें तो गुरु आपके प्यार में बंधा हुआ उसी जगह प्रकट हो जाएगा, आपको दर्शन देगा। आपकी तकलीफ पूछेगा। अगर हम गुरु का दिया हुआ सिमरन न करें और गुरु के कहे मुताबिक अपना जीवन न ढालें तो कबीर साहब यह कहते हैंः

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक।
अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक।।

मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे।।
धंनु धंनु गुरु गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे।।
जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली।।
ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली।।

जिस तरह बच्चा स्कूल में जाता है, वह बिल्कुल अन्जान होता है, टीचर उसका भविष्य बनाता है। बच्चा जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे टीचर उस पर अपनी तवज्जो बढ़ाता जाता है। इसी तरह हम भी रूहानियत के स्कूल में एक बच्चे की तरह हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि एम.ए. पास को पाँच साल के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। सन्त–सतगुरु अध्यापक का काम करते हैं। सेवक को विषय–विकारों के जंगल में से निकालकर 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं। वह रोज अंदर से भी हिदायत करते हैं और बाहर सतसंग के जरिए समझाते हैं कि खबरदार! आप विषय–विकारों को हाथ न लगाएं, इनसे दूर रहें और शब्द–नाम की कमाई करें।

गुरु रामदास जी कहते हैं जिस तरह कूंज सर्दियों में पहाड़ पर अंडे देकर अपने बच्चों को नहीं भूलती हमेशा दिल में रखती है। इसी तरह सन्त–महात्मा जिन्हें नाम दे देते हैं, उन्हें तब तक नहीं भूलते जब तक सच्चखंड न पहुँचा दें। एक महात्मा नाम देता है और दूसरा सतसंग सुनाकर उनसे तरक्की करवा लेता है। जिस तरह एक माली बूटे लगाता है, दूसरा माली पानी देकर उस बाग को हरा–भरा कर लेता है।

तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर शिष्यों को यह पता लग जाए कि सन्त हमारे साथ इतना प्यार करते हैं तो वे खुशी में नाच उठें।'' सिक्ख गुरु का दिया हुआ नाम जपते हैं और प्यार से गुरु के स्वरूप को अपने साथ लेकर चलते हैं। गुरु उनको बोझ नहीं समझता, हमेशा अपने बच्चों की संभाल करता है।

जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी।।
कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी।।
तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी।।

अब गुरु रामदास जी बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि जिस तरह जीभ दाँतों की रक्षा करती है, उसी तरह दाँत भी जीभ की रक्षा करते हैं। यह इन दोनों के अपने वश की बात नहीं, यह सब **परमात्मा का खेल** है। सन्त–महात्मा जब संसार मंडल में आते हैं तो समाज के कैदी लोग जिन पर परमात्मा ने दया नहीं की होती, वे महात्मा की बहुत निन्दा–आलोचना करते हैं। परमात्मा उनके प्यार में बंधा हुआ होता है, उन्हें डोलने नहीं देता बल्कि वे परमात्मा से ज्यादा प्यार करते हैं।

भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ।।
जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है
कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि यह किसी के अपने वश में नहीं, जिन पर परमात्मा दया करता है, वे ही नाम ले सकते हैं, वे ही सतसंग में आ सकते हैं, वे ही परमात्मा से मिल सकते हैं। जिस तरह हम संसार में देखते हैं कि परमात्मा ने पैदाईश भी अपने हाथ में रखी हुई है और जवानी भी अपने हाथ में रखी हुई है। अगर हम यह कहें कि जवानी न

आए, वह जरूर आएगी अगर यह कहें कि बुढ़ापा न आए तो वह भी जरूर आएगा। सुख–दुख भी परमात्मा ने अपने हाथ में रखे हुए हैं।

हम उसके हुक्म के अनुसार ही कर्म भोगते हैं अगर हम इन चीजों को वास्तव में सच समझते हैं और देख भी रहे हैं तो बुखार को कौन मांगता है? बुढ़ापा कौन मांगता है? बीमारी–दुखों को कौन मांगता है? ये सब चीजें बगैर मांगे ही आ जाती हैं। परमात्मा की भक्ति और नामदान प्राप्त करना भी हमारे अपने वश में नहीं, यह **परमात्मा का खेल है।**

ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु।।
जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि जिस तरह परमात्मा के हाथ में सब कुछ है मौत–पैदाईश, तंदरूस्ती–बीमारी सब कुछ उसके हुक्म में है। जो हमें दरगाह में जाकर छुड़वा सकता है तो क्यों न हम उस नाम को जीते जी प्रकट कर लें?

नाम एक प्रकार का वीजा होता है। फर्ज करें आपने हिन्दुस्तान जाना है तो सबसे पहले आपको हिन्दुस्तान की एम्बेसी में जाना पड़ेगा। हिन्दुस्तान की सरकार ने जो राजदूत मुकर्रर किए हैं, उनसे मोहर लगवाकर ही आप पालम हवाई अड्डे पर उतरकर हिन्दुस्तान में दाखिल हो सकते हैं। अगर आप वीजा प्राप्त नहीं करेंगे, मोहर नहीं लगवाएंगे तो आप हिन्दुस्तान में दाखिल नहीं हो सकेंगे।

इसी तरह परमात्मा ने भी वीजा देने के लिए अपने प्यारे पुत्र, अपने दूत इस संसार में भेजे होते हैं। जो लोग जाकर उनसे वीजा प्राप्त कर लेते हैं, मोहर लगवा लेते हैं, उन्हें काल की कोई ताकत रोक नहीं सकती। गुरु साहब कहते हैंः

जेजीआ डंनु को लए न जगाति, सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप। ✲✲✲

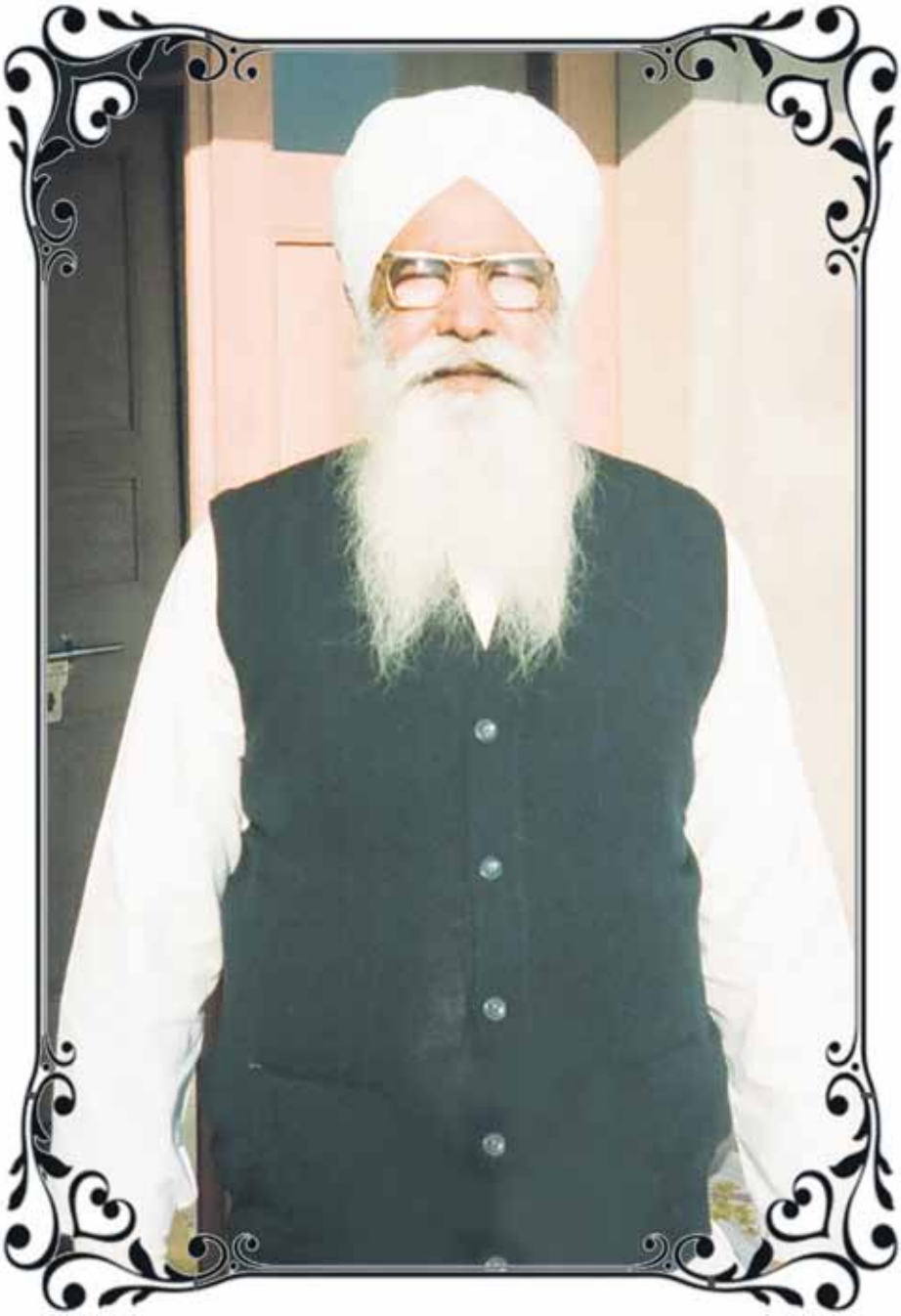

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक महत्त्वपूर्ण संदेश

नाम

10 मार्च 1991 | 84 आर.बी. राजस्थान

नाम लफ्ज तो बिल्कुल छोटा सा है लेकिन नाम जपने से पता चलता है कि यह कितनी बड़ी ताकत है। नाम ही एक वस्तु है जिसने संसार की रचना पैदा की है, नाम ने ही हमारे साथ जाना है अगर आज तक दुनिया में कोई बड़ा हुआ है तो वह नाम जपकर ही हुआ है।

अगर हमें मौका मिले तो हम यहां की जायदाद बेचकर बाहर के मुल्कों में चले जाते हैं। राजस्थान में एक साधु के होने के कारण बाहर के मुल्कों के लोग यहां की धूड़ी लेकर जाते हैं। पश्चिम से आने वाले प्रेमी यही कहते हैं कि हम आपके पास अमेरिकन बनकर नहीं आए, वे झोली फैलाकर कहते हैं कि हम आपके पास गरीब बनकर आए हैं। धन होने की वजह से अगर कोई अमीर होता तो अमेरिका वह मुल्क है जिसे धरती पर स्वर्ग कहा जाता है। वहां पर हर चीज तरतीब बार है। वहां के लोग पढ़े–लिखे हैं, अच्छा बोलना जानते हैं, बात को समझते हैं लेकिन वहां शान्ति नहीं। वे शान्ति की तलाश में यहां आते हैं।

किसी ने उनसे पूछा कि आपका मुल्क ठंडा है, वहां बाग–बगीचे हैं और सब कुछ ही है फिर आप राजस्थान क्या लेने जाते हैं? प्रेमियों ने कहा, ''वहां एक साधु रहता है, हम उनके पास जाते हैं। आप सतसंग सुनें, सतसंग सुनने से पता चलता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सुणिऐ अंधे पावहि राहु।

अंधे को सुनकर ही समझ आती है। आपको अच्छा मौका मिला है। सतसंग सुनने का फायदा तभी है अगर आप नाम जपेंगे। हम भूले हुए लोग होते हैं जो दूसरे की पिछली जिंदगी को देखते रहते हैं। हम कौडे राक्षस

की पिछली जिंदगी को न देखें, उस जिंदगी को देखें जब वह गुरु नानकदेव जी की शरण में आकर देवता बन गया, अच्छा इंसान बन गया।

महाराज सावन सिंह जी के जमाने में पंजाब में रावी और ब्यास दरिया के बीच में माझा इलाके में गंगू एक मशहूर डाकू था, वह इंसान को कुछ भी नहीं समझता था। अंग्रेजों के राज में डाकू बनना कोई मामूली बात नहीं थी। उसकी वह जिंदगी देखें जब वह महाराज सावन सिंह जी के चरणों में आया। उसने सिर्फ सुना ही था कि यहां कोई महाराज जी रहते हैं।

एक बार महाराज जी अमृतसर साहिब गए। वहां लोग लाईन लगाकर खड़े हुए थे तो गंगू ने उन लोगों से पूछा कि आप यहां लाईन लगाकर क्यों खड़े हुए हैं? उन लोगों ने बताया कि यहां सन्त महाराज जी आने वाले हैं। गंगू भी वहीं रूक गया। यह तो अपनी–अपनी देखनी है अगर हम किसी को इंसान समझकर देखेंगे तो वह इंसान ही दिखेगा। जब महाराज सावन सिंह जी ने उसकी तरफ देखा तो वह उनका ही बन गया।

गंगू जब नामदान के लिए पेश हुआ तो महाराज सावन के पैरों से लिपट गया। सन्त पैरों को हाथ लगवाकर खुश नहीं होते। महाराज सावन ने कहा, ''बेटा, ऐसा मत करो।'' गंगू ने उनके पैर नहीं छोड़े और कहा, ''आप जब मुझे बख्शेंगे मैं तभी आपके पैर छोड़ूंगा।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''यह बख्शवाने का अनोखा तरीका है।'' महाराज सावन ने उसे यह कहकर नामदान दिया कि गरीब–मार नहीं करना, किसी गरीब को नहीं लूटना, परोपकार करना है।

उसके बाद गंगू ने अपनी जिंदगी परोपकार में बिताई। आखिर पुलिस के हवाले हुआ कि मैंने जो गुनाह किए हैं, मैं वे गुनाह यहीं भोग जाऊं तो अच्छी बात है। उसे फाँसी की सजा हुई। आखिरी वक्त जज पूछा करते हैं कि तेरी कुछ खाने की या किसी से मिलने की कोई इच्छा है तो बता? गंगू ने कहा कि मेरी कोई इच्छा नहीं मेरा सब कुछ ठीक–ठाक है। बस!

मेरी एक ही इच्छा है कि जब मेरा संस्कार किया जाए तो मेरी लाश को महाराज सावन सिंह जी के चरणों में ब्यास पहुँचाया जाए। जो फाँसी दे रहे थे उनसे गंगू ने कहा, ''बख्शने वाले सावन सिंह जी महाराज आ गए हैं।''

मेरा आपको नमस्कार है, आपको यही संदेश है कि आप 'नाम' के बिना न रहें। सन्तों की शरण में आकर बड़े–बड़े चोर डाकुओं का सुधार हो जाता है। शुरु–शुरु में जब अंग्रेज यहां आने लगे तो कई लोगों का यही ख्याल था कि क्या यह सच है कि ये मीट–शराब छोड़ गए हैं? मैंने कहा, ''मैं आपको ज्यादा तो नहीं कहूंगा पर जहां कोई मीट–शराब खाता है, ये उस टेबल पर खाना भी नहीं खाते।'' पहले तो इनको नाम के लिए तैयार करना मुश्किल है क्योंकि जिन लोगों की जिंदगी हाड़–माँस खाकर गुजरी है, उन आदमियों को तैयार होने में दो–दो साल लग जाते हैं लेकिन जब एक बार नाम ले लिया उसके बाद ये इधर–उधर नहीं भटकते, ईमानदारी से नाम जपते हैं, किसी की बातों में नहीं आते।

हम हर एक को डायरी रखने के लिए देते हैं, डायरी एक किस्म का रोजनामचा है। जिसमें हम रोज अपनी जिंदगी के हालात लिखते हैं कि मैंने दिन में कितने घंटे नाम जपा? मैंने पैसों से या दिल से किसी का बुरा किया? मैंने किसी की कितनी निंदा–चुगली की? उसके बाद आप महीने का हिसाब लगाएं।

सन्तबानी आश्रम में भी इसी तरह है अगर आप कुछ भी नहीं करते तो खाली डायरी हमारे पास भेज दें ताकि मन को शर्म आए। इंसान कितने दिन खाली डायरी भेजेगा, क्या शर्म नहीं आएगी कि मैंने गुरु से क्या वायदा किया था, मैं उन्हें वहां जाकर क्या मुँह दिखाऊंगा?

सन्तमत अपने आपको सुधारने का मत है, अपने आपको समझने का मत है। हम अपने आपको तभी सुधार सकते हैं जब हम अपनी गलतियां देखें कि हमारे अंदर क्या कमी है? हम लोगों की निन्दा छोड़ दें। हम किसी

की निंदा तभी करते हैं जब हम अपने आपको अच्छा समझते हैं अगर हम अपने अंदर झाँककर देखें फिर हम कुछ कहने लायक नहीं। सबने नाम जपना है जो मौका मिला है उसका फायदा उठाएं।

आप इस बुजुर्ग की सेवा करें, यह आपके पास एक किस्म का कल्पवृक्ष है। आज जो यह रौनक है यह इसकी श्रद्धा का फल है। मैं बताया करता हूँ कि मेरे गुरु ने पच्चीस साल यही कहा, ''सन्त देने के लिए आते हैं, सवाल लेने वाले का है कि हमारा बर्तन कितना बना है।'' जिसका बर्तन बन गया उसका सब कुछ ही बन जाता है। जिस ख्याल और श्रद्धा को लेकर यह सन्तमत में आया था अगर हर इंसान वह ख्याल बना ले तो दुनिया में उदाहरण बनकर पेश आए।

किसी इंसान का पता तब चलता है जब वह वहां से चला जाए या संसार छोड़ जाए फिर ही उसकी अच्छाई–बुराई का ज्ञान होता है। इसने नाम लिया है, यह दिन–रात अपने अभ्यास में लगा हुआ है। मेरे पास दुनिया आती है। उनकी अपने घरों की बातें ही खत्म नहीं होती। 41 जी. बी. का बतनसिंह था वह दो–दो घंटे मेरे साथ अंदर की बात करता था, उस बुजुर्ग ने कभी मेरे साथ कोई दुनियावी बात नहीं की। मुझे खुशी है कि मेरे सेवकों को वह गति प्राप्त हुई जो कोई योगी प्राप्त नहीं कर सका।

आप बच्चे हैं परिवार में रहते हैं। कई बार बच्चों को डाँटना भी पड़ता है। बच्चों को जरा सा भी डाँट दें तो वे नाराज हो जाते हैं कि हां मुझे क्यों डाँटा? अगर बुजुर्ग का घर में इतना भी दबदबा न तो बच्चों का सुधार नहीं हो सकता। जितने दिन यह बुजुर्ग आपके पास बैठा है, आप सब मिलकर प्रेम–प्यार से इसकी सेवा करें।

महाराज कृपाल ने अपने माता–पिता की जी–जान से सेवा की। उनके चाचा जी बीमार थे अस्पताल में भर्ती थे, वहां कोई गरीब आदमी भी भर्ती था। वे जब अस्पताल जाते तो जो फल चाचा जी के लिए लेकर

जाते वही फल उस गरीब के लिए भी ले जाते थे। एक दिन चाचा जी ने उनसे कहा, ''कृपाल, मेरा तो हक है मैं तेरा चाचा हूँ लेकिन तू इसके लिए भी पैसे खर्च करता है।'' महाराज कृपाल ने कहा, ''चाचा जी, मेरे ऊपर इसका भी उतना ही हक है जितना हक आपका है।''

गुरु को खुश करने के लिए परमात्मा को पाने के लिए वे रात को भेष बदलकर लाहौर स्टेशन पर जिन बुजुर्गों से चला नहीं जाता था, उनके बिस्तर ढोया करते थे। है कोई ऐसा? महाराज कृपाल मिल्ट्री में डिप्टी एकाउंट आफिसर थे, कोई मामूली नहीं थे फिर भी उन्होंने कमर कसकर सेवा की। अगर किसी जगह महामारी फैली और जब लोग घर छोड़ गए तो उन्होंने उस वक्त घरों में जाकर लोगों की सेवा की।

महाराज कृपाल के पिता लगभग डेढ साल बीमार रहे, उन्हें मलमूत्र का भी पता नहीं चलता था। आपने दिन–रात उनकी जी–जान से सेवा की। एक दिन उनके पिता जी खुश होकर कहने लगे, ''देख कृपाल सिंह! मैंने रब तो नहीं देखा अगर रब है तो किसी ओर को मिले या न मिले तुझे जरूर मिलेगा। मैंने बड़े–बुजुर्गों से सुना है कि माँ–बाप का श्राप और आशीर्वाद लग जाता है इसलिए तुझे रब जरूर मिलेगा।''

महाराज जी कहा करते थे कि माँ–बाप का आशर्वाद ही मेरे पास है जो मैं महाराज सावन सिंह जी के चरणों में आया। मैं आपको कोई नई बात नहीं बता रहा हम जितना अपने बुजुर्गों की सेवा करेंगे, अपने बड़ों का आदर करेंगे उतना ही हमारे लिए फायदेमंद है।

खुशी जाए गंगा जमना दी, किती माता ते पिता दी न सेवा।

यह तो हम ऐसे ही लोगों को ढोंग दिखाते फिरते हैं, घर में बुजुर्ग माता–पिता तड़पते–मरते हैं, उन्हें पानी देकर खुश नहीं और हम बाहर पुण्य करते घूम रहे हैं। यह किस बात का पुण्य है भई? नाम जपना है, सबने मिलकर चलना है। अच्छा भाई, मैं आपसे इजाजत लेता हूँ। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

प्यार और भरोसा

25 सितम्बर 1988 — 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी :– *प्यारे महाराज जी, मुझे 'नामदान' प्राप्त हुए आठ साल हो गए हैं। तमाम कोशिशों के बावजूद भी मैं अभ्यास में कोई तरक्की नहीं कर सकी हूँ। अभ्यास से मेरा रास्ता उजागर नहीं होता, जिस वजह से लोग आपकी और मेरी निन्दा करते हैं इसलिए मुझे बहुत दुःख होता है। मैं जानना चाहती हूँ क्या मेरा स्वभाव बहुत ज्यादा खराब है या मेरे कर्म बहुत भारी हैं, मेरी सुरक्षा के लिए आपको कितना दुःख उठाना पड़ेगा?*

बाबा जी :– सभी सतसंगी इस सवाल को खुले दिल से सोचें, महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियां–बीबी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते, उनका तजुर्बा भी एक जैसा नहीं होता। हम नहीं जानते कि हम पिछले कौन से कर्मों का हिसाब दे रहे हैं, बुरे कर्मों का आत्मा पर बुरा प्रभाव पड़ता है।''

मैं कहा करता हूँ कि हार जाना उतना बुरा नहीं जितना हार मान लेना बुरा है। हमारा व्यक्तिगत तजुर्बा है अगर हम श्रद्धा, प्यार और भरोसे से इस रास्ते पर चलते हैं तो हमें खुद ही अपनी गलती का पता चल जाता है फिर हम शिकायत नहीं करते। 'नामदान' के समय दो सौ चार सौ प्रेमियों को एक साथ बिठाया जाता है लेकिन सबका तजुर्बा एक–सा नहीं होता। कई प्रेमियों को दो बार भी बिठाया जाता है। थोड़े ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अगर वे भी **प्यार और भरोसे** से अभ्यास करें तो उनकी शिकायतें खत्म हो जाती हैं।

बहुत सी अच्छी प्रेमी आत्माएं जब 'नाम' लेने आती हैं तो उन्हें ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं पड़ती; उन्हें जैसे ही तवज्जो दी जाती है

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

वे अपने अच्छे तजुर्बे इकबाल करती हैं। हमारा मन धोखेबाज है, यह बात को समझने ही नहीं देता।

पहले टूर पर सन्तबानी आश्रम में काफी लोगों को 'नामदान' दिया गया। वहाँ साउथ अफ्रीका की एक प्रेमी आत्मा आई, उसे 'नामदान' के समय न आवाज सुनाई दी और न रोशनी दिखाई दी। उसने बहुत प्यार और सब्र से कहा कि मुझे इसके कारण का पता है, समय आने पर सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसने नियम और प्यार से भजन–अभ्यास किया। उसके परिवार पर इस बात का बहुत अच्छा असर हुआ। उसके पति ने 'नाम' लिया। वहाँ और भी बहुत सी संगत बन गई। एक साल बाद उसे अच्छा तजुर्बा हुआ, उसका सब कुछ ठीक हो गया।

इसी तरह वहाँ एक और प्रेमी था जिसे दो बार बिठाया गया लेकिन उसे भी कोई तजुर्बा नहीं हुआ। कुछ समय बाद उसने पत्र लिखा कि तजुर्बा न होने का कारण मुझे मालूम है। मुझे अफसोस है कि मैं शर्म की वजह से आपको बता नहीं सका।

प्यारेयो, मन की यह आदत है यह अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता, हमेशा दूसरों पर इल्जाम लगाता है। अगर हम डायरी रखें तो कुछ ही दिनों में अपने आपको सुधार सकते हैं।

एक बार बाबा सावन सिंह जी पहाड़ पर गए। उन्होंने जिन्हें 'नामदान' दिया उन सबको अच्छा तजुर्बा हुआ। वे बहुत खुश हुए। वे हमेशा अपने सतसंगों में जिक्र किया करते थे कि पहाड़ की रूहें बहुत अच्छी और पवित्र हैं, 'नाम' देते ही इनका ख्याल अंदर चला जाता है।

बैंगलोर के प्रेमी हिन्दी अच्छी तरह नहीं समझते। वहाँ के कार्यक्रम में बहुत से प्रेमियों ने 'नाम' लिया। किसी को भी दूसरी बैठक देने की जरूरत नहीं पड़ी। वे बहुत अच्छी आत्माएं थी। मैं इसी साल कोलम्बिया गया। वहाँ बहुत से प्रेमियों ने सतसंग सुना और 'नामदान' लिया। वे

बहुत प्यार भरी आत्माएं थी, किसी ने भी दूसरी बैठक नहीं ली। सन्तमत सरकारी नौकरी की तरह नहीं है कि इतने सालों बाद सुरत अंदर जाएगी या तजुर्बा होगा। यह हमारी मेहनत, पवित्र ख्यालों, **प्यार और भरोसे** पर निर्भर करता है।

प्यारेयो, यह ठंडे दिल से समझने वाली बात है कि हमें गुरु पर भरोसा होता है, हम अभ्यास भी कर रहे होते हैं लेकिन हमारा ध्यान अपनी गलतियों की तरफ नहीं जाता। जिस तरह मरीज को डाक्टर पर भरोसा है। वह पैसे खर्च करके डाक्टर से दवाई लाता है। डाक्टर के कहे अनुसार परहेज नहीं करता और समय पर दवाई नहीं खाता तो उसे फायदा नहीं होता। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मरीज बिस्तर पर, दवाई अलमारी में और गालियाँ डाक्टर को।'' हमारी यही हालत है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

ठीका ठौर न पाय, गुरु को दोष लगावहीं।

हममें कुछ कमियाँ होती हैं। सतसंगी की जिम्मेदारी है कि वह घर में, पड़ोस में एक मिसाल बनकर पेश आए। उसे देखकर और लोग भी 'नामदान' प्राप्त करें, अपना जीवन बनाएं।

मैं अपने पिता की एक दिलचस्प बात बताया करता हूँ। सिक्ख समाज में सुबह जपुजी साहब पढ़ना जरूरी समझा जाता है। मेरे पिता को एक महात्मा मिला जो अंदर नहीं जाता था सिर्फ माला फेरा करता था। उसने मेरे पिता को माला देकर कहा कि जपुजी साहब पढ़ते हुए माला फेरा कर, तेरे बिगड़े हुए कारोबार ठीक हो जाएंगे।

आप जानते हैं कि घरों में बहुत समस्याएं होती हैं अगर न भी हों तो मन समस्याएं पैदा कर लेता है। मेरे पिता जी सुबह जानवरों को चारा डालते, नौकरों को गालियाँ देते और जपुजी साहब पढ़ते–पढ़ते माला भी फेरते रहते। मैं और मेरी माता कहते, ''परमात्मा तेरा जपुजी साहब का

पाठ पसंद करेगा या तेरी गालियों को पसंद करेगा?'' ऐसे लोग माला देने वाले को भी बदनाम करते हैं।

बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिता से कहा, ''तू ध्यान लगाकर जपुजी साहब का पाठ कर ताकि लोग तेरी तारीफ करें कि जब से यह माला जपने लगा है, किसी के साथ झगड़ता नहीं बहुत शान्त है।''

प्यारेयो, सतसंगी में से 'नाम' की खुशबू आनी चाहिए। सतसंगी को तजुर्बों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। चाहे मन को कितनी भी तकलीफ हो अभ्यास में अवश्य बैठें। शब्द, प्रकाश, तारे और देखने वाली शक्ति आपके अंदर है। कण–कण में व्यापक 'शब्द–रूप' गुरु भी अंदर आपकी इंतजार में है। हम तभी शिकायतें करते हैं जब अभ्यास में नहीं बैठते। सन्त हमें हिदायतें करते हुए कहते हैं, ''विषय–विकारों से दूर रहें। ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर एकाग्र करें। दुनिया में रहते हुए मन को काबू में करके अंदर जाना ज्यादा मुश्किल नहीं लेकिन जानी–दुश्मन मन ने इसे मुश्किल बना रखा है।''

एक प्रेमी :– *जब सतसंगी गुरु से दर्शनों की माँग करता है तो क्या उस समय वह चोर होता है?*

बाबा जी :– हम गुरु का दर्शन उस समय माँगते हैं जिस समय हमारा मन शान्त होता है और तीसरे तिल पर एकाग्र होने की कोशिश करता है। यह चोर नहीं होता, गुरु की देह के दर्शन करना चाहता है लेकिन मन बाहर ही भटकाता रहता है। सच तो यह है कि जब सतसंगी के अंदर ऐसा विचार उठता है तो उस समय उसे मौके का फायदा उठाकर अभ्यास में बैठ जाना चाहिए। जिस गुरु ने हमें 'नाम' दिया होता है, वह बेइन्साफ नहीं होता। वह हमारी आवाज सुनने के लिए नजदीक से नजदीक 'शब्द–रूप' में हमारे अंदर बैठा है। गुरु 'शब्द–रूप' होकर हमारे रोम–रोम में समाया हुआ है, वह सेवक को एक सेकंड के लिए भी नहीं छोड़ता।

सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द जी का एक शिष्य रूपचन्द था, रूपचन्द का एक भाई था। आमतौर पर अप्रैल–मई के महीने में बहुत गर्मी होती है। उस समय जमींदार लोग फसल की कटाई करते हैं। उन दिनों फ्रिज नहीं होते थे, ठंडा पानी बहुत मुश्किल से मिलता था। दोनों भाइयों को प्यास लगी, वे पानी पीने के लिए सुराही के पास गए। सुराही का पानी बहुत ठंडा था उन्होंने सोचा, यह पानी तो गुरु के पीने के काबिल है। वे प्यास से व्याकुल हो गए लेकिन उन्होंने पानी नहीं पिया।

उस जगह से लगभग पचास–साठ मील की दूरी पर गुरु हरगोबिन्द जी संगत में बैठे थे। गुरु हरगोबिन्द जी घोड़ा तेज दौड़ाने में माहिर थे। सतसंग करते हुए कहने लगे कि हमारे सेवक प्यास से व्याकुल हैं, हमें बहुत जल्दी उनके पास पहुँचना है। गुरु हरगोबिन्द ने वहां पहुँचकर उन्हें पानी पिलाया। जिस जगह गुरु हरगोबिन्द ने अपने शिष्यों को पानी पिलाया, अब उस जगह यादगार बनी हुई है। सोचें, उस समय कौन–सा टेलीफोन गया था? दिल को दिल से राह होती है। गुरु जानी–जान होते हैं। गुरु ने वहां पहुँचकर अपने शिष्यों को दर्शन दिए और उनकी आत्मा की प्यास बुझाई।

महाराज कृपाल बताया करते थे कि राजा राम सर्राफ महाराज सावन सिंह जी का प्यारा शिष्य था। एक बार वह खरबूजा खाने लगा, खरबूजा बहुत मीठा था। उसे अंदर ही ख्याल आया कि यह खरबूजा तो महाराज जी के खाने के काबिल है, उन्हें इसका भोग लगवाया जाए। मुल्तान से डेरा ब्यास काफी दूरी पर है। राजा राम सर्राफ उसी तरह खरबूजा कार में लेकर डेरा ब्यास पहुँचा। उस समय महाराज सावन सिंह जी सतसंग देने के लिए होशियारपुर गए हुए थे। उस समय काफी आँधी तूफान चल रहा था। जब राजा राम खरबूजा लेकर होशियारपुर पहुँचा, महाराज सावन ने उसे देखकर हँसते हुए कहा, ''राजा राम, तूने इतनी तकलीफ क्यों उठाई? खरबूजा तो तभी मिल गया था जब तूने मुझे याद किया था।'' शिष्य की

तड़प को गुरु ही पूरा कर सकता है। जिसने प्यार किया है वही प्यार की कद्र जानता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन बोलयां सब कुछ जांणदा, किसपे करिए अरदास।

हम जीव अंधे हैं, नहीं जानते कि जो वस्तु गुरु से माँग रहे हैं उसमें हमारा फायदा है या नुकसान है? कई बार हम जो माँगते हैं, उसमें हमारा बहुत बड़ा नुकसान होता है। इस बात का फैसला गुरु ही कर सकता है कि हमारे लिए क्या फायदेमंद है, अगर हम दर्शन माँगते हैं तो गुरु दर्शन अवश्य देता है।

आज इस जगह 16 पी.एस. में सब सुविधाएं हैं। यहाँ बाग हैं, पानी की सुविधा है और यहाँ पहुँचने के लिए पक्की सड़के भी हैं। जब हजूर कृपाल इस गरीब अजायब को दर्शन देने के लिए आते थे, तब यहाँ ऐसी कोई सुविधा नहीं थी सिर्फ रेत ही रेत थी। यह सिर्फ दर्शनों की माँग ही थी। आज आप यहाँ जो गुफा देखते हैं, उस समय यहां इतना सा ही मकान था जो उनके हुक्म से बनवाया गया था।

मैं कहा करता हूँ, ''रोने का मजा नहीं आता जब तक आँखें पोंछने वाला पास न हो।'' यह एक सच है कि वे मेरी आँखों के आँसू पोंछने के लिए भी आते थे, ढांढ़स भी देते थे अगर वे ढांढ़स न देते तो यह गरीब आत्मा अभ्यास ही नहीं कर सकती थी। शिष्य पुतली और गुरु उसे नचाने वाला नट होता है। पुतली की डोर नट के हाथ में होती है। यह हम पर निर्भर करता है कि हमारे अंदर गुरु के प्रति कितना भरोसा और कितनी श्रद्धा है। गुरु के हुक्म को मानना ही सबसे बड़ी सेवा है अगर हम गुरु के हुक्म का पालन करते हैं तो चुटकी बजाने में तो देर लगती है लेकिन वह पहले ही दर्शन दे देता है। अगर हम अंदर जाएं, आत्मा से तीनों पर्दे उतार लें तो जान जाएंगे कि गुरु देह नहीं होता। देह तो उसने इस संसार मंडल में आकर धारण की हुई है जो उसने यहीं छोड़ जानी है। गुरु का असली

रूप 'शब्द–नाम' होता है जो कण–कण में व्यापक है। गुरु ने बाहर से नहीं आना अंदर से ही दर्शन देने हैं।

आमतौर पर शिष्य और गुरु में ऐसे तजुर्बे होते रहते हैं। गुरु किसी और देह में बैठकर भी प्रेमी का काम कर जाता है। प्रेमी शिष्य समझ जाता है कि यह हमदर्दी मेरे गुरु ने ही की है।

बाबा जयमल सिंह जी ने सावन सिंह जी से कहा था, ''हमें गुरु के खेल को समझना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि रात के समय हम रास्ता भूल जाते हैं, गुरु किसी और का रूप धारण करके हमें सही रास्ते पर डाल देता है। अगर सेवक का ध्यान गुरु की तरफ हो तो गुरु अपने असली स्वरूप में भी आ सकता है।'' अगर सन्त इस तरह के चमत्कार दिखाएं तो हम उनका जीना ही मुश्किल कर देते हैं। गुरु सेवक के सब काम करता है लेकिन जाहिर नहीं होने देता।

एक बार की बात है कि हम हनुमानगढ़ के नजदीक से निकल रहे थे। उस दिन बहुत तेज बारिश हुई थी, दिन छिपने वाला था। हमारी जीप एक खड्डे में गिर गई जिसमें से निकलना बहुत मुश्किल था। तब मुझे 'नाम' मिला ही था, मेरे साथ दो–तीन प्रेमी भी थे। जीप का ड्राईवर पदमपुर का रहने वाला था। मैंने उससे कहा कि मैं जीप के अगले एक हिस्से को ऊपर उठाता हूँ, तू रेस दे; तेरी जीप खड्डे में से निकल जाएगी।

मैंने बहुत प्यार से अपने गुरु के आगे प्रार्थना की कि जिस तरह कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी थी। दुर्योधन सभा में द्रौपदी को बेइज्जत कर रहा था, जब द्रौपदी ने कृष्ण की आराधना की तो वहाँ साड़ियों के ढेर लग गए। इसमें मेरी कोई करामात नहीं थी। यह सब गुरु कृपाल की करामात थी कि हमारी जीप उस खड्डे में से निकल गई।

प्यारेयो, गुरु पर्दे के पीछे सेवक के सब कार्य करता है। जो सेवक अपना बाहुबल छोड़कर गुरु के सहारे हो जाता है, गुरु उसके सारे कार्य

अवश्य करता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर बेटा बीमार हो जाए तो हम प्रार्थना करते हैं कि गुरु इसे ठीक करें। हम कर्मों के बोझ को नहीं समझते, बेटा ठीक नहीं होता तो हमारा गुरु से भरोसा खत्म हो जाता है। मुकदमा लगने पर हम अपनी गलती नहीं समझते, मुकदमा फतेह नहीं होता तो हम गुरु से भरोसा खत्म कर लेते हैं। हम बच्चे की चाह रखते हैं अगर बच्चा पैदा न हो तो गुरु से भरोसा खत्म कर लेते हैं। बच्चा पैदा होता है, रोता है तब हम कहते हैं कि आप इसे चुप कराएं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो लोग गुरु से ऐसी आशाएं रखते हैं वे अपने घरों में ही रहें। उन्होंने सन्तों से क्या फायदा उठाना है। 'नाम' जपने वाले और गुरु की आज्ञा का पालन करने वाले ही गुरु से फायदा उठा सकते हैं। अगर हमारी कोई आशा पूरी नहीं होती तो सेवक को यह समझना चाहिए कि मुझमें ही कोई कमी होगी। गुरु सेवक की हर बात सुनता है और मुनासिब मदद भी करता है।

***

धन्य अजायब

2024 में सतसंगों के कार्यक्रम

1	31 जनवरी – 04 फरवरी	बुधवार से रविवार (5 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
2	1 – 3 मार्च	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
3	15 – 17 मार्च	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	पठानकोट, पंजाब
4	5 – 7 अप्रैल	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
5	17 – 19 मई	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	दिल्ली
6	5 – 7 जुलाई	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	अहमदाबाद
7	2 – 4 अगस्त	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	जयपुर
8	7 – 12 सितंबर	शनिवार से वीरवार (6 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
9	4 – 6 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
10	1 – 3 नवंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम
11	29 नवंबर – 1 दिसंबर	शुक्रवार से रविवार (3 दिन)	16 पी.एस. आश्रम

RNI No - RAJHIN/2003/9899

हम जीव अंधे हैं, नहीं जानते कि जो वस्तु गुरु से माँग रहे हैं उसमें हमारा फायदा है या नुकसान है? कई बार हम जो माँगते हैं, उसमें हमारा बहुत बड़ा नुकसान होता है। इस बात का फैसला गुरु ही कर सकता है कि हमारे लिए क्या फायदेमंद है, अगर हम दर्शन माँगते हैं तो गुरु दर्शन अवश्य देता है।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज